AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

हिन्दी आलोचना में दूधनाथ सिंह का योगदान

ORIGINAL ARTICLE

Author

शिव कुमार मेहता,

शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
विनोबा भावे महाविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

शोध सार

मुक्तिबोधः साहित्य में नई प्रवृत्तियाँ दूधनाथ सिंह की आलोचनात्मक पुस्तक है। यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन से वर्ष 2013 में प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में दूधनाथ सिंह ने मुक्तिबोध के चिंतन, काव्य–रचना, प्रक्रिया पर गंभीरता पूर्वक विचार किया है। मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं उनकी काव्य संरचना पर अब तक इस प्रकार से विचार नहीं हुआ है। यहाँ उनकी काव्यगत विशेषताओं, रचना–प्रक्रिया की लेखक ने पड़ताल की है। पुस्तक में 'प्रारंभिक कविताएँ', 'तार सप्तक', 'प्रेम कविताएँ', 'जमाने का चेहरा', 'तिमिर में समय झरता है', 'पार्टनर – तुम्हारी पॉलिटिक्स क्या है?', 'उन्हें युद्ध की ही करने दो बात', 'अंधेरे में', 'ब्रह्म राक्षस की तीसरी पीढ़ी', 'साँवली हवाओं में काल टहलता है', 'चंबल की घाटियाँ' और 'आत्मचित्र' जैसे शीर्षकों में विभक्त कर उनकी कविताओं पर चिंतन हुआ है। दूधनाथ सिंह कहते हैं– मुक्तिबोध बातचीत और बहस में अक्सर सबसे पहले यह पूछते थे, पार्टनर, तुम्हारी पॉलिटिक्स क्या है? वे जिससे संवाद कर रहे हैं, उसकी विचारधारा क्या है। वह जाने–अनजाने कैसे सोंचता है। उसके विचार तर्क और साक्ष्य के स्तर पर कहाँ ठहरते हैं। जनता, समाज और दुनिया के लिए उसके विचार कितने उपयोगी, लाभप्रद या हानिकर है। उनका कोई ठोस आधार है या वे मात्र उसके 'मनस्तरंगवाद' की उपज है– ये सारी बातें जानने–समझने की कोशिश करते हुए वे देश–दुनिया, समाज–इतिहास, विज्ञान और साहित्य इत्यादि पर अपनी बहस आगे बढ़ाते थे और सामने वाले को समझने–समझाने का प्रयास करते थे।[1] सुप्रसिद्ध आलोचक जीवन सिंह ने इस पुस्तक के संबंध में कहा है– दूधनाथ सिंह ने मुक्तिबोध के जीवन और रचना–संघर्ष को चार स्तर पर देखा है। पहला वामपंथियों–परंपरावादियों से जो आगे देखने के बजाय पीछे की ओर ज्यादा देखते हैं। दूसरा, कठमुल्ला मार्क्सवादियों से जो विचारधारा को एक स्थिर दर्शन की तरह व्यवहार में लाते हैं। तीसरा, उन वामपंथियों से, जो अपने लाभ–लोभ के लिए खेमा बदलने में कोई संकोच नहीं करते और चौथा उनका अपने संशयों, संस्कारों और आस्थाओं से। कहना न होगा कि जिस व्यक्ति के रचनात्मक स्तर पर संघर्ष के इतने आयाम रहे हैं, उसने अपनी रचना के लिए कितना अटूट, ईमानदारी, अटल, तल स्पर्शी और बहुआयामी संघर्ष किया होगा, यह हम समझ सकते हैं। यही मानना पड़ता है कि मुक्तिबोध के संघर्ष किसी लेखक के सामान्य नहीं है।[2] दरअसल दूधनाथ सिंह की यह पुस्तक उनकी आलोचनात्मक दृष्टि को समझने में काफी सहायक है।

मुख्य शब्द

प्रवृत्तियाँ, अंतर्वस्तु, फंतासी, आत्महंता, पॉलिटिक्स.

निरालाः आत्महंता आस्था

दूधनाथ सिंह की 'निरालाः आत्महंता आस्था' एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसका प्रकाशन 1972 ई० में हुआ था। इसका प्रकाशन लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद से हुआ है। इस पुस्तक में निराला की कविता, रचना–प्रक्रिया, उनका विराट व्यक्तित्व पर काफी गहराई से विवेचन किया गया है। दूधनाथ सिंह के अनुसार– निराला का काव्य–व्यक्तित्व इतना विराट, गहन, गंभीर और कुछ ऐसा सीमाहीन लगता है, जिसके बाहरी विचार और सिद्धांत और अध्ययन रेखाएँ तिरोहित हो जाती है और फिर जो कुछ भी रचकर बाहर आता है, वह सिर्फ 'निराला' होते हैं। सामयिकता उनके व्यक्तित्व में घुलकर एक निजी और मौलिक रूप धारण करती है। रचना–प्रक्रिया के ये कई–कई आवर्त लगातार हर समय उनके काव्य व्यक्तित्व को आंदोलित करते रहते हैं और उनके रंगों, ध्वनियों और अर्थों से भरी अनेक छवियों वाली कविताएँ लगातार वे रचते चलते हैं। काल–क्रम के आधार पर एक ही समय के आस–पास रची गयी भिन्न–भिन्न ढंग की इन कविताओं में कोई तारतम्य और संगीत बिठाना विचित्र लगता है।[3] प्रभाकर सिंह दूधनाथ सिंह की इस पुस्तक के संबंध में सही कहा है। निराला के बारे में यह कथन वही लिख सकता है जो उनकी रचनाओं के साथ उनको भी नजदीक से जाना हो परखा हो। दूधनाथ जी निराला के अंतिम दौर में उनके पास ही नहीं रहे, निराला की कविताओं के प्रथम श्रोता भी रहे। उस मिलन की संवेदना को वह अपनी डायरी में दर्ज करते रहे फिर निराला की रचनाओं को डूबकर पढ़ा। 1962 से शुरू हुआ यह सिलसिला 1972 में 'निरालाः आत्महंता आस्था' के रूप में सामने आया। यह पुस्तक निराला के कवि व्यक्तित्व और कृत्तित्व को विवेचित करने वाली पहली व्यवस्थित आलोचनात्मक कृत्ति है। यह कहना गलत न होगा।[4] दूधनाथ सिंह ने पहले निराला से संबंधित बातें डायरी में लिखी थी, बाद में उन्हें पुस्तक के रूप में पाठकों के सामने लाया है। यही कारण है कि इसमें शोध जैसी विचार प्रवाह नहीं मिलता है लेकिन पूरी पुस्तक में निराला की रचना–प्रक्रिया एवं व्यक्तित्व को परत दर परत उघाड़ने वाली एक संवेदनात्मक अर्न्तदृष्टि है। उनकी आलोचना का दर्शन भी यहाँ होता है। निराला के संबंध में दूधनाथ सिंह कई नये तथ्यों की खोज की है।

लौट आ ओ धार (संस्मरण)

दूधनाथ सिंह कविता, कहानी, उपन्यास के अलावा संस्मरण भी लिखे हैं। 'लौट आ ओ धार' का प्रकाशन 1995 में हुआ। युगीन साहित्यकारों के जीवन, उनके संघर्ष, उतार–चढ़ाव, चिंता एवं परेशानियों को काफी नजदीक से देखा है। इनमें दूधनाथ सिंह की जिन्दगी के यथार्थ का दर्शन होता है। उनके संस्मरण में निराला, पंत, शमशेर, ज्ञानरंजन, बच्चन, महादेवी वर्मा, काशीनाथ सिंह, नागार्जुन, धीरेन्द्र वर्मा, धर्मवीर भारती, इलाहाबाद के साहित्यिक परिवेश दर्ज है। 'लौट आ ओ धार' दूधनाथ सिंह के स्मृतियों का एक ऐसा दस्तावेज है, जिसमें हिंदी साहित्य के निर्माताओं के साथ लेखक के बिताए विभिन्न प्रकार के अनुभव है। विभिन्न प्रकार के संबंधों का ज्ञान होता है। साहित्यकारों के सहयोगी चरित्र एवं संवेदनशीलता का ज्ञान होता है। दूधनाथ सिंह ने पंत, महादेवी, शमशेर जैसे कवियों से जुड़े अनेक प्रेरणादायक प्रसंगों का इस संस्मरण में उल्लेख किया है। एक प्रखर चिंतक–आलोचक होने के कारण लेखक ने वरिष्ठ सुप्रतिष्ठित कवियों की रचनाओं का पोस्टमार्टम करने में थोड़ा–सा भी नहीं डरा है। समकालीन ज्ञान क्षेत्र के प्रति भी उनमें तीव्र प्रतिक्रिया होती रही है। अपने पूर्वज साहित्यकारों की स्मृतियों को सुरक्षित रखने को लेकर दूधनाथ सिंह में सबसे अधिक चिंता दिखाई पड़ती है। अपने संस्मरण में कहते हैं– हम अपने पूर्वजों के स्मृति–चिन्हों को सुरक्षित रखने में विश्वास नहीं रखते। हम दहन और विनाश और उपेक्षा और तिरस्कार में यकीन रखते हैं। हमारी 'उदासी' और हमारी 'विस्मृति' दार्शनिक है। यह यथार्थवाद है जनाब कि हम उनकी स्मृतियों को यथार्थ में जाने। यह निरा भौतिक होना है। यह दुनियाबीपन है। यह पश्चिम है, जो चढ़कर बोलता है। इससे हमारा रहस्य थोड़ा छीजता है। हमारा अद्वैत धूमिल होता है। हम इतिहास और जीवन को निचाट तथ्यों के रूप में नहीं देखना चाहते। हम पुराण कथाएँ रचते हैं। प्रक्षेप करते हैं। हम इतिहास को धुन्ध में लपेटकर रखना चाहते हैं। यह धुंध ही हमें किवदंतियों तक ले जाती है फिर हम मिथक रचते हैं। तब हमारे लिए व्यक्तित्वों में घुसपैठ सरल हो जाती है। हम उन्हें मनमना रूप दे सकते है– अपने अनुकूल गढ़ सकते हैं इसीलिए, अपने पूर्वजों से जो हमें मिलने वाला है, उसे ले लेते हैं फिर उन्हें भूल जाते हैं। 'रामचरितमानस' हमारे लिए काफी है। उसके

बाद गोस्वामी जी हमारे लिए मिथक हैं। अतः यह महत्वपूर्ण नहीं है कि वे कहाँ रहे, किन जीवन–स्थितियों ने उनका निर्माण किया। वे कैसे खाते–सोते, उठते–बैठते थे, उनके मानसिक संघात क्या थे, यानी जब उन्होंने कहा कि– "कबहूँ मन विश्राम न मान्यों' तो उनकी मनःस्थिति में क्या चल रहा था। अर्थात् आदमी के रूप में वे कैसे थे। उनके दुख–दर्द, उनकी हँसी–उदासी, उनका विक्षोभ, उनकी पराजयें, उनके जीवन के उतार–चढ़ाव..... यानी कि एक सहज–सरल आदमी इसको जानना और उसकी सुरक्षा का सवाल, ये सब पूरब की शैली में नहीं है। इससे हमारा रोमांचक रहस्य नष्ट होता है। हमारी इन्द्रजालिकता के इन्द्रधनुषी रंग उसका आधा चाँद एकाएक हमारी संस्कृति के आकाश में धुल जाता है।[5] पुस्तक में उन्होंने पंत जी उनका सहारा किस प्रकार बने, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नौकरी के लिए कितना प्रयत्न किया, कोर्ट का कितना चक्कर लगाना पड़ा, गृहत्याग, पत्नी निर्मला से प्रेम–विवाह करना आदि कई पारिवारिक एवं साहित्यिक विषयों से जुड़े प्रसंगों का उल्लेख किया है। पंत, शमशेर एवं ज्ञानरंजन से जुड़ी अधिक स्मृतियाँ हैं। इनके साहित्यिक कर्म के चूकने एवं परवान चढ़ने को भी दूधनाथ सिंह ने रेखांकित किया है।

सबको अमर देखना चाहता हूँ

दूधनाथ सिंह का 'सबको अमर देखना चाहता हूँ' दूसरा महत्वूपर्ण संस्मरण है। यह संस्मरण कहानीकार सतीश जमाली, राजनेता–चन्द्रशेखर, अमृतराय, विजय मोहन सिंह और सत्यप्रकाश पर आधारित है। इसमें इन लेखकों के जीवन से जुड़े कई रोचक, गंभीर विषय एवं व्यवहारिक प्रसंग है। दूधनाथ सिंह के संस्मरण लेखकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों पक्षों को सामने लाते हैं। विजय मोहन के व्यक्तित्व के संबंध में दूधनाथ सिंह कहते हैं– विजय मोहन सिंह जिसको बहुत प्यार करते थे, उसके बारे में उत्फुल्ल भाव से तरह–तरह की कथाएँ गढ़–छील कर सुनाते थे। उस वक्त उनके चेहरे पर छलकता–महकता वात्सल्य भाव देखने लायक होता था। उनकी एक कुहनी कुर्सी के हत्थे पर और हथेली में ठुड्डी, खूबसूरत कटावधार होठों में हल्की मुस्कान। कहानी शुरू करने से पहले विजय मोहन सिंह एक मूर्ति की तरह होते थे। जाहिर था कि हम सब में वे काशीनाथ सिंह को सबसे ज्यादा प्यार करते थे। अतः कथाएँ भी अधिकतर काशीनाथ सिंह के बबुएपन के बारे में ही। ऐसे में काशी वहाँ से उठकर चले जाते या कभी एक फीकी, कभी ठहाके के साथ उन कहानियों का सामना करते।[6] इसी तरह इस संस्मरण पुस्तक में अमृत राय, सतीश जमाली, सत्यप्रकाश और पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर की जिन्दगी व लेखन से जुड़ी अनेक यादगार स्मृतियाँ दर्ज है।

अपनी शताब्दी के नाम

दूधनाथ सिंह की यह पुस्तक कविताओं, कहानियों एवं आलोचनात्मक लेखों का संग्रह है। एक साथ कविता, कहानी एवं आलोचना का निदर्शन मुश्किल है। चूँकि दूधनाथ सिंह की साहित्यिक यात्रा कविता से शुरू हुई है इसलिए इस पुस्तक में संग्रहित कविताएँ राष्ट्रीय प्रेम, जन–जागृति एवं जीवन–समाज की विसंगतियों को सामने लाती है। प्रकृति की नाना छवियाँ इनकी कविताओं में है। 'स्वयंप्रभा झील' में कहते हैंः

'एक चेहरा गुलाबों की बाड़ में झुका है।
झील पर खुद एक गुलाब है यह दिन.....
सूर्य–कोरक में ओस का ध्वनि–विस्तार
हँसी का आनंद सागर बिछाता हुआ नीलम आकाश,
खाली हवा की सरसराहट सुन पड़ती है।'[7]

कविता के अलावा दो कहानी 'रक्तपात' और 'सीखचों के भीतर' दी गई है। 'चुनौती या आत्म समर्पण', 'अनुभव का अकेलापन', 'समय कोई निर्णय नहीं देता', 'काव्यगत प्रभाव और मौलिकता की समस्या', 'आधुनिकताः एक सतत् क्रियाशील प्रश्न', 'आधुनिकता, एक प्रश्न, एक स्पष्टीकरण' एवं 'अनुभव का अकेलापन' जैसे आलोचनात्मक लेख है। ये सभी लेख समकालीन हिंदी साहित्य एवं वैचारिक आग्रहों को समझने में महत्वपूर्ण है।

महादेवी

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को केंद्रित कर लिखी गई दूधनाथ सिंह की आलोचनात्मक पुस्तक है। पूर्व में महादेवी वर्मा के साहित्य एवं रचना–कर्म पर विभिन्न आलोचकों ने कई किताबें लिखी है, लेकिन उनके व्यक्तित्व को इतने विस्तार से किसी ने हिंदी पाठकों के सामने नहीं लाया है। लगभग पाँच सौ पृष्ठों में दूधनाथ सिंह ने एक वृहद ग्रंथ लिख डाला है। महादेवी वर्मा के कई अतरंग अनछुए प्रसंगों को लिखा गया है, जिनके संबंध में साधारण क्या बड़े–बड़े आलोचकों को पुस्तक पढ़ने के बाद पहली बार मालूम हुआ। उनके गीतों के भावों, विचारों की यहाँ नये दृष्टिकोण से व्याख्या की गई है। इसमें दूधनाथ सिंह ने कवयित्री के साहित्यिक जीवन में आये उतार–चढ़ाव का जैसा वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण किया है, वैसा दुर्लभ है। दरअसल में आत्मकथात्मक ढंग से लिखी गयी यह पुस्तक महादेवी वर्मा को समग्रता से समझने में मदद करती है। उनके प्रति साहित्य जगत में कई प्रकार की अफवाहें हैं, भ्रम हैं, गलत अवधारणाएँ हैं, इन सबको लेखक ने गहरी पड़ताल के बाद दृष्टि को साफ किया है। उनके दैनिक–जीवन की क्रिया–कलापों से लेकर साहित्य जीवन में की जाने वाली गतिविधियों तक का ऐतिहासिक लेखा–जोखा है। उनका जन्म, घर–परिवार, माता–पिता, प्रेम संबंध, विवाह, शिवा से जुड़ी घटनाएँ बिल्कुल नये प्रसंग में आती है। महादेवी कविता के अलावा चित्र भी बनाती थी। इस संबंध में दूधनाथ सिंह एक जगह कहते हैं– महादेवी ने जैसे अपने कवि–जीवन का आरंभ समस्यापूर्ति से किया, वैसे ही चित्र–रचना का खेल भी उन्होंने बचपन से ही शुरू किया था। एक जगह वे लिखती हैं– 'कह नहीं सकती अब वे वयोवृद्ध चित्रकार जिनके निकट मैंने रेखाओं का आरंभ किया था, अब होंगे या नहीं। इससे पता चलता है कि बचपन में किसी चित्रकार (सदाशिव राव) से उन्होंने रंग–रेखाओं का अभ्यास करना सीखा था। प्रसिद्ध चित्रकार श्री शंभुनाथ मिश्र को बहुत दिनों तक महादेवी ने 'प्रयागमहिला विद्यापीठ' में कला–शिक्षक के रूप में रखा था। अपने आवास 1, एल्गिन रोड पर रहते हुए उन्होंने मिश्र जी से विधिवत चित्र–दीक्षा ली। उन्होंने उनसे काफी कुछ सीखा। शंभुनाथ जी बड़े सरल–हृदय, हंसमुख चित्रकार थे। बाद में कुछ दिनों तक विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग में भी वे रहे। सम्भवतः महादेवी ने वाश शैली का अभ्यास उन्हीं के प्रशिक्षण–निर्देशन में किया। इस सबके बावजूद महादेवी चाहे विनम्रतावश ही सही अपने को चित्रकार मानने से झिझकती है।[8] दूधनाथ सिंह की 'महादेवी, देवत्व नहीं मनुष्यता की महादेवी' शीर्षक अपने लेख में प्रसिद्ध आलोचक श्री रंग कहते हैं– दूधनाथ सिंह की महादेवी वह महादेवी नहीं है, जो हमारे पाठयक्रमों की महादेवी है महीयसी महादेवी। वह किताबों की किताबी महादेवी भी नहीं है। उनकी महादेवी छायावादी साहित्य की निष्कलुप महानायिक भी नहीं है जिन्हें देवत्व प्राप्त था या प्रदान किया जा चुका था। सम्भवतः जिन्हें वह देवत्व का रूप प्रिय भी था। दूधनाथ सिंह की महादेवी अपनी मानवीय अच्छाइयों, बुराइयों, कमजोरियों, विसंगतियों, संगतियों से मुक्त है जो एक शीर्ष कवियत्री हैं, व्यवहारिक और सामाजिक, अध्ययनशील और मननशील, स्त्री अस्मिता को नया अर्थ प्रदान करने वाली, स्त्री–जीवन के नये मुहावरे गढ़ने वाली, स्त्री के पक्ष में नया, किन्तु भारतीय बिंब गढ़ती, एक स्त्री का स्वतंत्र आधुनिक भारतीय जीवन का वरण करती और समूची स्त्री जाति को इसके लिए प्रेरित करती, महादेवी। जो केवल कवयित्री ही नहीं एक स्त्री भी है जो अपनी रचना में स्त्री का जो बिंब गढ़ती है, वह भारत की समूची स्त्री जाति का प्रतिनिधित्व करती है।[9] इस प्रकार दूधनाथ सिंह की 'महादेवी' पुस्तक महादेवी की रचना–प्रक्रिया, चिंतन, दर्शन, सामाजिक, राजनीतिक एवं मानवीय संवेदना को बड़ा ही व्यापक ढंग से प्रस्तुत करती है। दूधनाथ सिंह ने महादेवी वर्मा के संपूर्ण साहित्य–चिंतन एवं व्यक्तित्व को दर्शनों लघु–शीर्षकों के अंतर्गत विवेचना की है।

निष्कर्ष

इस प्रकार दूधनाथ सिंह एक साथ कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, संस्करणकार, नाटककार, आलोचक एवं चिंतक है। साठोत्तरी हिंदी कथा साहित्य में इतने बड़े व्यक्तित्व एवं बहुआयामी प्रतिभा के रचनाकार कोई दूसरा नहीं हैं। इनकी प्रतिभा की चमक इनकी कृतियों में आलोकित है। स्वप्निल श्रीवास्तव के अनुसारः दूधनाथ सिंह ने अपने लेखन में परंपरा की रूढ़ि को तोड़ा है। उनकी मूल विधा कहानी है, लेकिन उन्होंने अपने लेखन को एक विधा तक सीमित नहीं किया है। कहानी के अलावा कविता, उपन्यास, नाटक, संस्करण तक अपनी रचनात्मकता का विस्तार

किया है। वह बेचैन लेखक हैं, इसलिए भी अपनी बेचैनी को प्रकट करने के लिए अनेक विधाओं का चुनाव करते हैं। प्रायः विधाओं में आवाजाही को लोग संदेह की दृष्टि से देखते हैं। वस्तुतः एक विधा में विफल लोग दूसरी विधा का चुनाव करते हैं।[10] लेकिन दूधनाथ सिंह एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो ऐसी भ्रांतियों को मिटाते हैं। उन्होंने जिन–जिन विधाओं को हाथ में लिया उनकी ख्याति के अलावा उनमें उपलब्धियाँ भी दर्ज है। वे एक सुलझे चिंतक, लेखक और प्रखर आलोचक है।

दूधनाथ सिंह का आलोचना–साहित्य आधुनिक हिंदी आलोचना की परंपरा में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इनकी आलोचना पारंपरिक आलोचाना शैली को नकार कर नई आलोचना शैली को जोड़ती है। एक नई आलोचना दृष्टि देती है। पूर्व के आलोचकों के पास अक्सर बनी–बनाई फिक्स जीवन–दृष्टि प्राप्त होती है, जो किसी विचारधारा के आलोक में निर्मित है और यही कारण है कि उनकी आलोचना कृतियों से हटकर कृतिकारों को ध्वस्त करने या फिर अपनी दृष्टि के अनुसार किसी खाते में दर्ज करने का काम करती है। उनमें मौलिकता का अभाव है। दूधनाथ सिंह इस रूप में मौलिक हैं कि उन्होंने अपनी आलोचना को किसी विचारधारा का पिछलग्गू नहीं बनने दिया, बल्कि चिंतन स्व–चिंतन–मनन से रचनाओं पर विचार किया। सत्य की पड़ताल की। यह सच है कि व्यवस्थित शोध नहीं किया गया है। उनकी आलोचना का उद्‌भव अपने संपर्क में आए कवियों लेखकों के संस्थाओं के माध्यम से हुआ है, जो अधिक विश्वसनीय है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, दूधनाथ. *मुक्तिबोधः साहित्य में नई प्रवृत्तियाँ.* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, पहला संस्करण–2013, पृ० 83.
2. चतुर्वेदी, संतोष कुमार (संपादक). *अनहद*–9. पृ० 224.
3. सिंह, दूधनाथ. निरालाः आत्महंता आस्था. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, आठवाँ संस्करण– 2014, पृ० 16.
4. अग्रवाल, विजय (संपादक). *साहित्य विकल्प.* अंक–06, पृ० 317.
5. सिंह, दूधनाथ. *लौट आ, ओ धार.* पृ० 32.
6. सिंह, दूधनाथ. *सबको अमर देखना चाहता हूँ.* इलाहाबाद, साहित्य भण्डार, 50, चाहचन्द (जोरो रोड), प्रथम संस्करण–2017, पृ० 55–56.
7. सिंह, दूधनाथ. *अपनी शताब्दी के नाम.* इलाहाबाद, साहित्य भण्डार, 50, चाहचन्द रोड, प्रथम संस्करण–2014, पृ० 67.
8. सिंह, दूधनाथ. *महादेवी.* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, पहली आवृत्ति–2011, पृ० 121–22.
9. अग्रवाल, विजय (संपादक). *साहित्य विकल्प.* अंक–06, पृ० 332.
10. चतुर्वेदी, संतोष कुमार (संपादक), अनहस–9, जून 2020, पृ. 178।

––==00==––